

जैसे- मूलधन 4. नींव, बुनियाद स्वयं ग्रंथकार द्वारा लिखा गया ग्रंथ आदि जिस पर टीका, भाष्य आदि लिखा जाए 5. ज्यो. सत्ताईस में से उन्नीसवाँ नक्षत्र वि. किसी बात के मुख्य आधार के रूप में रहने वाला जैसे- मूल सिद्धांत 2. जिसके आधार पर आगे चलकर कुछ परिवर्तन न हो जैसे- 'मूल अधिनियम 3. मुख्य, प्रधान आदि।

मूलक वि. (तत्.) 1. उत्पन्न करने वाला, जनक 2. जो किसी के मूल में हो 3. जिसके मूल में कुछ हो पुं. 1. मूल स्वरूप 2. मूल नामक कंद 3. ऐसा विष जो वृक्षों के मूल या जड़ के रूप में होता है।

मूलक पर्णी स्त्री. (तत्.) सहिजन (पेड़)।

मूल-कमल पुं. (तत्.) हठ योग में नाभि के आस-पास का अवयव जो कमल के रूप में माना जाता है, नाभि कमल।

मूल-कर्म पुं. (तत्.) आयु. त्रासन, उच्चारण, स्तंभन, वशीकरण आदि का वह वांछित प्रयोग जो विशेष ओषधियों के मूल द्वारा किया जाता है, कुछ खास जड़ी-बूटियों के मूल से किया जाने वाला टोना-टोटका।

मूलकार पुं. (तत्.) मूल ग्रंथ का रचनाकार (कर्ता)।

मूलकारिका स्त्री. (तत्.) 1. मूल रचना जिसकी टीका की गई हो 2. उधार पर दिए गए धन की विशेष प्रकार की वृद्धि या सूद 3. चंडिका देवी का एक नाम।

मूल-कृच्छ्र पुं. (तत्.) स्मृतियों में उल्लिखित ग्यारह प्रकार के पर्णकृच्छ्र में से एक जिसमें मूल आदि कुछ जड़ों का क्वाथ या रस पीकर एक माह तक रहना होता है (मिताक्षरा)।

मूल-खनक पुं. (तत्.) 1. जड़ें खाकर जीवन निर्वाह करने वाला 2. एक प्राचीन वर्ण संकर जाति जो पेड़ों से जीविका चलाती थी।

मूल गौन पुं. (देश.) नाचने गाने वाली मंडली में अपने सदस्यों को नाचना-गाना सिखाने वाला व्यक्ति।

मूलच्छेद पुं. (तत्.) 1. जड़ सहित उखाड़ना या काटना, समूल नष्ट करना 2. पूरी तरह से किया जाने वाला नाश।

मूलज वि. (तत्.) 1. मूल से उत्पन्न 2. जड़ से उत्पन्न होने वाला जैसे- अदरक, अरबी आदि।

मूलतः क्रि.वि. (तत्.) मूल रूप से, मूल की दृष्टि से, आरंभ से।

मूल-त्रिकोण पुं. (तत्.) ज्यो. जन्म कुंडली के पाँचवे और नवें भाव को त्रिकोण कहते हैं, कुछ विद्वान प्रथम भाव को भी त्रिकोण में गिनते हैं।

मूल-द्रव्य पुं. (तत्.) 1. मूलधन, पूँजी 2. सृष्टि में वह भूत या द्रव्य जिससे अन्य भूतों या द्रव्यों की उत्पत्ति हुई है।

मूल-द्वार पुं. (तत्.) मुख्य-द्वार, सिंह-द्वार, सदर दरवाजा।

मूल-द्वारावती स्त्री. (तत्.) प्राचीन द्वारावती नगरी जो आजकल की द्वारका से कुछ दूर समुद्र के अंदर समा गई है।

मूल-धन पुं. (तत्.) पूँजी या वह धन जो अधिक धन कमाने के उद्देश्य से लगाया जाय, मूल रूप से कार्य हेतु लगाई गई या बैंक आदि में जमा पूँजी।

मूलधानी पुं. (तत्.) किसी काम में मूल पूँजी लगाने वाला या निवेश करने वाला दे. पूँजीपति।

मूल-धातु स्त्री. (तत्.) शरीर के अंदर की मज्जा, सार।

मूलन वि. (तत्.) पूर्ण, समूचा (अव्य.) 1. मूलतः 2. निश्चित रूप में, अवश्य ही।

मूलपर्णी स्त्री. (तत्.) मंडूक पर्णी, ब्राह्मी, मंजिष्ठा।

मूल-पाठ पुं. (तत्.) 1. मूल लेख जिसे लेखक ने स्वयं लिखा हो 2. वह लेख जिसमें कोई प्रक्षेपण न किया गया हो।

मूल-पुरुष पुं. (तत्.) मूल पूर्वज आदि पुरुष जिससे वंश आगे चला हो।